IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोक कलाकारों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सरकार द्वारा किये ये प्रयास

प्रो0 किन्शुक श्रीवास्तव
शोध निर्देशिका

आयुषी खुराना
शोधार्थी
वनस्थली विद्यापीठ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपने दैनिक जीवन में उसे प्रसन्नता के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। अपनी प्रसन्नता से वह स्वयं तो आनन्दित होता ही है दूसरों को भी उसमें सम्मिलित कर उसे असीम आनन्द की प्राप्ति होती है। लोक संगीत प्रसन्नता तथा आनन्दिाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। आज लोक संगीत घर की चार दीवारी तक सीमित न रह कर रंगमंच को सुशोभित कर रहा है। सभ्यता के विकास प्रौद्योगिकी के प्रचार प्रसार में तीव्र परिवर्तन ने लोक संगीत को कुछ हानि पहुंचाई फिर भी इनका अनेक माध्यमों से प्रचार प्रस्तुतियां, प्रतियोगिताएं तथा लाकपर्वो पर इनके महत्व का प्रकाशन, इस लोक संगीत को जीवित रखने में सार्थक कदम है।

अगर लोक संगीत को व्यवसाय के रूप में ग्रहण करते हैं तो यह व्यवसाय उम्र भर जीविकोपार्जन के लिए पर्याप्त नहीं है। इसलिए इन लोक गायकों व लोक नर्तकों के सुरक्षित भविष्य के लिए कुछ ठोस कदम उठाने आपेक्षित है। हरियाण प्रदेश के लोक कलाकारों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सरकार ने कुछ प्रयास किए हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. आकाशवाणी केन्द्र रोहतक, कुरूक्षेत्र
2. दूरदर्शन केन्द्र हिसार, दिल्ली, ब्च्ब्ए दिल्ली, हिसार
3. लोक संपर्क विभाग, चण्डीगढ़
4. कला परिषद्, चण्डीगढ़
5. चित्रपट विभाग
6. विश्वविद्यालय, महाविद्यालय (शिक्षण संस्थाएँ)
7. पर्यटन विभाग, हरियाणा

8. उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र

9. गैर सरकार संस्थाएँ

1. आकाशवाणी केन्द्र –

हरियाणा प्रदेश में प्रथम आकाशवाणी केन्द्र 1976 में रोहतक में खोला गया। दूसरा आकाशवाणी केन्द्र कुरूक्षेत्र में स्थापित किया गया। इन केन्द्रों ने हरियाणवी लोक संगीत व लोक नृत्य के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिकाा निभाई है। इन केन्द्रो द्वारा संगीत, नृत्य संध्या, सम्मेलन तथा कंसर्ट आयोजित की जाती है। संगीत सभाओं तथा संगीत गोष्ठियों का भी आयोजन किया जाता है। आकाशवाणी एक ओर प्रचार–प्रसार माध्यम की भूमिका निभाती है तो दूसरा ओर कलाकारों को परिचित कराने, जनमानस में लोकप्रिय बनाने तथा कुछ सीमा तक कलाकार की आर्थिक सहायता भी करता है। संगीत और संगीतज्ञों को देश के कोने–कोन तक पहुंचाने में आकाशवाणी ने एक सशक्त माध्यम की भूमिका निभाई है।

2. दूरदर्शन केन्द्र –

दूरदर्शन, जनसंचार का सर्वाधिकर प्रभावशाली माध्यम है। इस दृश्य श्रव्य माध्यम की कोई भौगोलिक सीमा न होने के कारण इसे सार्वभौमिक माध्यम भी कहा जाता है। हरियाणा में हिसार दूरदर्शन की स्थापना के पश्चात् लोकनर्तकों को बहुत लाभ हुआ है। द्रदर्शन नर्तकों व गायकों को उनके घर पर ही उनकी प्रस्तुति दिखाता है। दर्शकों को घर से बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। पहले श्याम श्वेत पर्दा के कारण दर्शक इसका आनन्द तो उठाते थे। किन्तु आज जैसे रंगीन टी.वी. का लुत्फ तो कुछ और ही है।

3. हरियाणा लोक सम्पर्क विभाग –

हरियाणा लोक संपर्क विभाग का मुख्य उद्देश्य लोकसंगीत, लोकनृत्य तथा लोक कलाकारों की कला के माध्यम से सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध जन जागरण अभियान चलाना है। इन लोक कलाकारों की डांस, ड्रामा मंडलियाँ लोक सम्पर्क विभाग द्वारा चयनित की जाती है।

4. कला परिषद् –

कला परिषद् एक सांस्कृतिक केन्द्र है जहाँ हरियाणा प्रदेश की लोक कलाओं तथा कलाकारों को प्रोत्साहन मिलता है। यह परिषद् लोक नृत्यों, नाटकों, रांगों–रागिनियों की प्रस्तुति करवाती है। इसके प्रचार–प्रसार के लिए मल्टीमिडिया केन्द्र बनाए गए है। एक ऐसा ही केन्द्र धर्म नगरी कुरूक्षेत्र में कार्य कर रहा है।

5. हरियाणा चित्रपट –

लोकनृत्यों के प्रचार–प्रसार में हरियाणवी चित्रपट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक सभ्यता के विकास के साथ सामाजिक रहन–सहन, वेशभूषा तथा मनोरंजन के साधनों में भी परिवर्तन आया है। हिन्दी फिल्मों की भांति हरियाणा में भी क्षेत्रीय बोली तथा पृष्ठभूमि पर कई फिल्मों का निर्माण हुआ। सतीश कश्यप जी से साक्षात्कार करने क बाद पता चला कि वह कितने देश में घूम आए परन्तु जो मिट्टी की खुशबु भारत में है वह कहीं नहीं।

6. हरियाणवी लोकगीतों के प्रचार–प्रसार में विभिन्न संस्थाओं का योगदान –

हरियाणा के विश्वविद्यालयों द्वारा प्रोत्साहन एवं संरक्षण हरियाणा के चारों विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, चौधरी चरण चिंह विश्वविद्यालय, हिसार एवं गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा हरियाणवी लोकगीतों का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। विश्वविद्यालय अपने संगीत एवं नृत्य विभाग व युवा कल्याण एवं संस्कृति विभाग के माध्यम से हरियाणवी लोक संगीत को प्रसिद्ध करने के लिए निरन्तर प्रयास रत हैं।

इसके अतिरिक्त श्री अनूप लाठर जो कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के युवा कल्याण एवं सांस्कृतिक विभाग के निर्देशक है ने हरियाणा के लोक संगीत में नया इतिहास जोड़ा ह।

7. हरियाणा पर्यटन विभाग –

भारतीय पर्यटन विभाग तथा हरियाणा पर्यटन विभाग लोक कलाओं के प्रचार–प्रसार का महत्वपूर्ण माध्यम है। पर्यटन विभाग का मुख्य उद्देश्य पर्यटकों को क्षेत्र विशेष की लोक संस्कृति से अवगत कराना है।

विदेशी पर्यटक विशेष रूप से हरियाणवी संस्कृति के प्रति आकर्षित रहते है। वे हरियाणवी नृत्यांगनाओं की वेशभूषा को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं तथा हरियाणवी दामन पहन कर देखते हैं। इस दिशा में फरीदाबाद स्थित सूरजकुंड का मेला लोकप्रिय है। यहाँ प्रतिवर्ष एक से पन्द्रह फरवरी तक लोक कलाकारों का जमघट लगता है जिसमें भारत के अतिरिक्त कई लाख विदेशी पर्यटक आते है। इस प्रकार के आयोजनों से सरकारी मुद्रा में भी बढ़ोत्तरी होती है। हरियाणवी लोकनृत्य इस मेले का मुख्य आकर्षण होता है।

8. उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला –

भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध रूचि को देखते हुए भारत सरकार को इसके प्रचार–प्रसार के लिए विशेष क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित करने के लिए आवश्यकता अनुभव हुई। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी के प्रयासों से सन् 1985 में भारत में सात सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की गई। ये केन्द्र पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओं के हिसाब से बनाए गए।

9. गैर सरकारी संस्थाएँ –

हरियाणा प्रदेश में संस्कृति के प्रचार–प्रसार हेतु कई गैर सरकारी संस्थाएँ कार्य कर रही है। ये संस्थाएँ अपने कलाकारों को जगह–जगह लोकनृत्यों की प्रस्तुति हेतु भेजतो हैं। अम्बाला, कुरूक्षेत्र, करनाल, रोहतक, सोनीपत, जीन्द, महेन्द्रगढ़ में ऐसे अनेक ग्रुप तथा संस्थाएँ है।

10. सरकार द्वारा संरक्षण –

आधुनिक परिवेश में हरियाणा के लोक संगीत के प्राचीन स्वरूप को संरक्षण प्रदान करने और उसके विकास के लिए हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर कटि बद्ध है। उन्होंने हरियाणा में पं. लख्मी चन्द्र जी की पुण्यतिथि पर के.सी. शर्मा द्वारा राई में आयोजित एक श्रद्धांजली समारोह में भाग लेकर लोक संगीत तथा लोक गीतों को एक नया कदम दिया था। उन्होंने घोषणा की थी हरियाणा की अपनी सांस्कृतिक अकादमी होगी जो हरियाणा की संस्कृति एवं लोक संगीत के विकास के लिए कार्य करेगी। इस अकादमी के एक भवन में एक सभागार युक्ताकाश रंगमंच होगा।

इस प्रकार हरियाणा सरकार हरियाणवी लोक संगीत व लोक कलाकारों के लिए अनेक मार्ग प्रशस्त कर रही है तथा हरियाणवी संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन में प्रयत्नशील है।